सच्ची मित्रता

मनोज कुमार सतीजा*

सही मित्र सही जिंदगी की ओर ले जाता है और गलत मित्र जिंदगी को तबाही की ओर ले जाता है, क्योंकि सही मित्र जीवन में संजीवनी का काम करता है तो गलत मित्र मीठे विष का कार्य करता है जो हमें हानि और विनाश की ओर ले जाता है। मित्रता के कई प्रसंग हमें पौराणिक कथाओं में, रामायण व महाभारत जैसे महान ग्रन्थों में राम-सुग्रीव-मित्रता, कृष्ण-सुदामा-मित्रता के उदाहरण के रूप में मिलते रहे हैं। साहित्य में भी बहुत कुछ लिखा गया है। संस्कृत नाटकों और पंचतंत्र कथाओं में तथा कबीर से लेकर अब तक के साहित्य में हमें मित्रों के अनेक गुण और अवगुणों के विषय को लेकर छंद, कविता, लेख, निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि देखने को मिलते हैं। यहाँ तक की मित्रता को लेकर अनेक फिल्में भी बन चुकी हैं। साहित्य हो या फिल्में ये सभी इस बात को स्वीकार करते हैं कि यदि जीवन में सही मित्र का साथ प्राप्त हो जाए तो व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने का साहस प्राप्त कर लेता है। जीवन की जिन उलझनों को सुलझाने में वह अपने आप को असफल मानने लगता है, मित्र आकर न केवल उन उलझनों से उसे पार लगाता है बल्कि जीवन में नया उत्साह और उमंग का संचार भी करता है। यही नहीं समय पड़ने पर वह अपने मित्र के लिए हर तरह के समर्पण, त्याग और बलिदान देने के लिए भी तैयार रहता है। अपने हर सुख-दुःख का साथी वह मित्र ही बन जाता है। यहाँ तक कि कई बार यह मित्रता इतनी घनिष्ठ हो जाती है कि व्यक्ति अपने परिवार जनों से भी अधिक महत्व मित्र को देने लगता है। अपने अवसाद, आनन्द और जीवन के महत्वपूर्ण बातों से मित्र को सबसे पहले अवगत कराता है, परिवार को बाद में।

प्रश्न उठते हैं कि एक व्यक्ति एक मित्र में ऐसी क्या आत्मिकता को प्राप्त करता है, जो उसे उसके परिवार से अधिक महत्त्वपूर्ण बना देती है? क्यों एक लड़की अपने मन के मनोभावों को अपने माता-पिता के सम्मुख बाद में रखती है, अपनी सहेली के सम्मुख पहले? क्या कारण है कि मित्र के सामने शर्म, उम्र, भय के बिना अपने दिल का हाल अभिव्यक्त सहजता से कर देता है? क्या वास्तव में व्यक्ति के जीवन में मित्रता का इतना अधिक महत्व है? क्या वास्तव में सही मित्र सही जिंदगी का मार्ग प्रशस्त करते हैं? क्या मित्रता केवल हम उम्र के लोगों के बीच मे होती है? सही या सच्चे मित्र की पहचान क्या है?

वास्तव में मित्रता के लिए कोई समय सीमा नहीं है। यह कभी भी किसी भी उम्र के पड़ाव में हो सकती है। इसके लिए ना तो किसी प्रकार की कुंडली के मेल करवाने की आवश्यकता होती है, ना ही रंग, रूप, जाति, धर्म की समानता की आवश्यकता होती है। मित्रता पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, मां-बेटा, मां-बेटी, स्त्री-पुरुष, पड़ोसी, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई किसी भी धर्म या जाति के लोगों के बीच हो सकती है। अमीर और गरीब में हो सकती है। यहाँ तक की भगवान् और भक्त के बीच भी हो सकती है। इस तरह सच्ची मित्रता सभी सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक बंधनों से मुक्त होती है। सच्ची मित्रता को साबित करने के लिए किसी डीएनए की आवश्यकता नहीं पड़ती और ना ही किसी रिश्ते, जाति, व धर्म की। यह तो परिस्थितियों के समय आई विपत्तियों के समय मित्र द्वारा की गई सहयोग की भावना ही स्वयं साबित कर देती है कि जीवन में कौन सच्चा मित्र है और कौन नहीं। जीवन में मित्रता भी विभिन्न पड़ावों से गुजरती है। स्कूल, कॉलेज, आफिस, गली-मोहल्ले की मित्रता आदि लेकिन इसके अतिरिक्त आजीवन निभाई जाने वाली मित्रता भी होती है, जो विश्वसनीयता, घनिष्ठता, आत्मीयता, भावुकता, सहनशीलता, त्याग-भावना, समर्पण-भावना और स्पष्टवादिता के गुणों से परिपूर्ण होती है। वास्तव में यही सच्ची मित्रता होती है, जो सही जिंदगी जीने के सफर में सबसे कारगर व सहायक सिद्ध होती है। ऐसी सही मित्रता पर आयु, लिंग, जाति, धर्म की समानता इत्यादि का कोई बन्धन नहीं

* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

होता, क्योंकि सही मित्र का हर सुख-दुःख उसके मित्र के साथ जुड़ा होता है। उसका विश्वास सन्देह के दायरे से बाहर होता है। उसकी भावुकता हर स्तर पर अपने मित्र से जुड़ी होती है, लेकिन वह इतनी जागरुकता से भरी भी होती है कि निर्भय होकर अपने मित्र की खामियों की आलोचना कर उसमें इतना साहस भर सके कि वह सहज ही उन विसंगतियों से उबर जाता है। इसलिए कहा जाता है कि सही मित्र की संगत व्यक्ति के चरित्र को उज्ज्वल करने मे सहायक तो होती ही है साथ ही भावी जीवन में उसके अन्तर्मन में नयी ऊर्जा का संचार करने में भी सहायक सिद्ध होती है।

सही मित्र की संगत में जीवन के छोटे बड़े अवगुण कैसे गुणों में परिवर्तित हो जाते हैं, इस बात का आभास भी नहीं होता है। जिन मनोभावों को व्यक्ति अन्य किसी के सामने अभिव्यक्त करने में संकोच करता है, वह अपने मित्र के सम्मुख सहज ही कर डालता है। जिसके कारण वह अपने आप को तनावमुक्त तो महसूस करता है, साथ ही उसे अपनी समस्या का समाधान भी मिलने की संभावना दिखाई देने लगती है। लेकिन यह भी सत्य है कि जीवन में प्रत्येक मित्र सही ही मिले ऐसा भी सम्भव नहीं है। इसलिए सही मित्र मिलने वाले व्यक्ति को सौभाग्यशाली माना जाता है। मित्र की हर बात पर हाँ में हाँ मिलाने वाले या चलने वाले मित्रों के बीच भरोसेमंद या विश्वसनीय घनिष्ठता की मित्रता नहीं बनती क्योंकि हाँ में हाँ मिलाने वाले अधिकतर मित्र या तो पाखंडी व स्वार्थी होते हैं या फिर अव्वल दर्जे के मूर्ख। इसलिए यह आवश्यक है कि सच्ची मित्रता में मित्रों में एक-दूसरे के अवगुणों को समय से बताने का साहस होना चाहिए। संकट और कठिन समय में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, विश्वास, निष्ठा और समर्पण का भाव होना चाहिए। वे लोग वास्तव में सौभाग्यशाली होते हैं, जिन्हें जीवन मे सच्चे मित्र मिलते हैं क्योंकि समय के साथ-साथ सभी सम्बन्धों में किसी ना किसी कारण बदलाव आता है, किन्तु सच्ची मित्रता किसी भी परिस्थिति में बदलती नहीं है। उसमें सदैव आपसी निष्ठा बनी रहती है। इसलिए वास्तव में सही मित्र सही जिंदगी का प्रतीक होता है -

''गुजर जाता है जीवन सुहावना,
साथी मिल जाए यदि सयाना।।''

*****